Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

[1]प्रो0 बिमला सिंह ✉ [2]पूजा

[1]बी0एड0 विभाग एस0बी0डी0 (पी.जी.) कॉलेज धामपुर **भारत**.
[2]शोधार्थिनी
DOI:

प्रस्तुत शोध "माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों प्राथमिक की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर आधारित है। माध्यमिक स्तर को विद्यार्थी के जीवन का संक्रमणकालीन चरण माना जाता है, जहाँ उसकी सोच, व्यक्तित्व, लक्ष्य–निर्धारण तथा शैक्षिक दृष्टिकोण का निर्माण होता है। इस स्तर पर विकसित शैक्षिक अभिवृत्ति विद्यार्थी की उपलब्धि, अनुशासन, आत्म–प्रेरणा तथा भविष्य के शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्णयों को प्रभावित करती है। वर्तमान शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा यह ज्ञात करना कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों में अभिवृत्ति के स्तर में कोई सार्थक अंतर विद्यमान है या नहीं। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में बिजनौर जनपद के माध्यमिक स्तर के कुल 200 विद्यार्थियों (100 सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी एवं 100 निजी विद्यालय के विद्यार्थी) का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया, जिनमें सरकारी एवं निजी विद्यालयों के समान प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित किया गया। शोध उपकरण के रूप में शोधकर्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक अभिवृत्ति प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें विद्यार्थियों की शिक्षा, विद्यालय, शिक्षक, पाठ्यक्रम, परीक्षा तथा अध्ययन प्रक्रिया के प्रति संज्ञानात्मक, संवेगात्मक एवं व्यवहारात्मक पक्षों का आकलन किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात के माध्यम से किया गया। प्रथम परिकल्पना के अंतर्गत छात्रों (लड़कों) की शैक्षिक अभिवृत्ति की तुलना सरकारी निजी विद्यालयों के आंकडो द्वारा की गई। इससे यह स्पष्ट हुआ कि दोनों समूहों के मध्य शैक्षिक अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर विद्यमान है। इसी प्रकार द्वितीय परिकल्पना के अंतर्गत छात्राओं (लड़कियों) की शैक्षिक अभिवृत्ति का विश्लेषण किया गया, जो सार्थकता स्तर से अधिक होने के कारण दोनों समूहों के मध्य महत्वपूर्ण अंतर को दर्शाता है। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर निजी विद्यालयों के विद्यार्थी, (छात्र या छात्राएँ,) की शैक्षिक अभिवृत्ति के स्तर पर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं। यह अंतर संभवतः विद्यालयी वातावरण, संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षण–पद्धति, अभिभावकीय सहयोग तथा प्रतिस्पर्धात्मक माहौल जैसे कारकों से प्रभावित हो सकता है। प्रस्तुत शोध शिक्षा की गुणवत्ता, समान अवसर एवं शैक्षिक सुधार की दिशा में उपयोगी संकेत प्रदान करता है। शोध द्वारा निष्कर्ष नीति–निर्माताओं, शिक्षकों तथा प्रशासकों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं, जिससे सरकारी विद्यालयों में भी सकारात्मक शैक्षिक अभिवृत्ति के विकास हेतु उपयुक्त शैक्षिक वातावरण एवं प्रेरक उपायों को सुदृढ़ किया जा सके। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में अभिवृत्ति संबंधी शोध को समृद्ध करने का एक सार्थक एवं उपयोगी प्रयास है।

Keywords: माध्यमिक स्तर, सरकारी एवं निजी विद्यालय, विद्यार्थी, शैक्षिक अभिवृत्ति.

प्रस्तावना

माध्यमिक स्तर शिक्षा की संक्रमणकालीन अवस्था है, जहाँ बालक किशोरावस्था में प्रवेश करता है, इस अवस्था में बालक का व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, मूल्यबोध तथा भविष्य की शैक्षिक एवं व्यावसायिक दिशा का निर्माण प्रारम्भ होता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति अर्थात् शिक्षा, विद्यालय, शिक्षक, पाठ्यक्रम, परीक्षा एवं अध्ययन प्रक्रिया के प्रति एवं मानसिक प्रवृत्ति उनकी शैक्षिक उपलब्धि, अनुशासन, आत्म–प्रेरणा तथा आजीविका निर्माण पर गहरा प्रभाव डालती है। भारत में शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक नीतिगत परिवर्तन हुए हैं, विशेषकर Right of Children to Free and Compulsory Education Act तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के उपरान्त शिक्षा की गुणवत्ता, समावेशन, समान अवसर तथा सीखने के परिणामों पर विशेष बल दिया गया है। इन नीतियों का उद्देश्य सरकारी एवं निजी विद्यालयों के मध्य गुणवत्तात्मक अंतर को कम करना तथा विद्यार्थियों में सकारात्मक शैक्षिक अभिवृत्ति का विकास करना है जिससे शिक्षा केवल प्रमाणपत्र प्राप्ति का माध्यम न रहकर समग्र व्यक्तित्व विकास का साधन बन सके।

सरकारी एवं निजी विद्यालयों की संरचना, संसाधन, प्रशासनिक व्यवस्था, शिक्षण–पद्धति,

Received **09 April 2026**; Accepted **27 April 2026**. Available online: **30 April 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

अनुशासन प्रणाली तथा सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि में स्पष्ट भिन्नताएँ पाई जाती हैं। सरकारी विद्यालय प्रायः राज्य सरकारों द्वारा संचालित होते हैं और अध्ययनरत् विद्यार्थी विविध सामाजिक एवं आर्थिक वर्गों के होते हैं। सरकारी विद्यालयों में शिक्षा का उद्देश्य सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करना होता है, जबकि निजी विद्यालय सामान्यतः निजी प्रबंधन द्वारा संचालित होते हैं और उनमें अपेक्षाकृत उच्च आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी अधिक संख्या में होते हैं। निजी विद्यालयों में भौतिक संसाधनों, अंग्रेजी माध्यम, सह–पाठयगामी गतिविधियों एवं तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता अपेक्षाकृत अधिक देखी जाती है, जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। दूसरी ओर, सरकारी विद्यालयों में सामाजिक विविधता, सरकारी योजनाओं का लाभ तथा सामुदायिक परिवेश का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक सोच को आकार देता है।

शैक्षिक अभिवृत्ति एक मनोवैज्ञानिक संकल्पना है, जिसमें संज्ञानात्मक, संवेगात्मक तथा व्यवहारात्मक घटक सम्मिलित होते हैं। संज्ञानात्मक पक्ष में विद्यार्थी का शिक्षा के महत्व के प्रति विश्वास एवं धारणा आती है, संवेगात्मक पक्ष में विद्यालय एवं अध्ययन के प्रति रुचि, आनंद या उदासीनता शामिल होती है तथा व्यवहारात्मक पक्ष में अध्ययन–अनुशासन, नियमितता, सहभागिता एवं उपलब्धि के प्रति प्रयास दिखाई देता है। यदि विद्यार्थी की अभिवृत्ति सकारात्मक होती है, तो वह अध्ययन में अधिक रुचि लेता है, चुनौतियों का सामना करते हुए उच्च उपलब्धि प्राप्त करने का प्रयास करता है। इसके विपरीत नकारात्मक अभिवृत्ति शैक्षिक में शिक्षा के प्रति उदासीनता, पिछड़ापन, अनुपस्थिति, अनुशासनहीनता एवं विद्यालय त्याग की प्रवृत्ति को जन्म दे सकती है। अतः सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति की तुलना करना आवश्यक है, जिसके द्वारा यह समझा जा सकता कि किस प्रकार का शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल सिद्ध हो रहा है।

भारतीय समाज में शिक्षा को सामाजिक उन्नयन, आर्थिक सशक्तिकरण एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रमुख साधन माना जाता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी उच्चतर माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की दिशा की ओर अग्रसर होते हैं, अतः इस स्तर पर उनकी अभिवृत्ति भविष्य की सफलता का संकेतक बन सकती है। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामान्यताआर्थिक चुनौतियाँ, पारिवारिक दायित्व एवं संसाधनों की कमी जैसी परिस्थितियाँ देखी जाती हैं, जो उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति को अत्यधिक प्रभावित कर सकती हैं। वहीं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण, अभिभावकों की अपेक्षाएँ एवं संसाधनों की प्रचुरता के कारण अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण भिन्न हो सकता है। इन सभी कारकों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा यह स्पष्ट किया जा सकता है कि संसाधन ही सकारात्मक अभिवृत्ति का प्रमुख कारण हैं, या शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध, विद्यालयी वातावरण एवं अधिप्रेरणा जैसे मनो–सामाजिक तत्व भी प्रभावित करते है।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति एवं डिजिटल शिक्षा के विस्तार ने भी

Received 09 April 2026; Accepted 27 April 2026. Available online: 30 April 2026. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति को प्रभावित किया है। स्मार्ट कक्षाएँ, ऑनलाइन शिक्षण, प्रोजेक्ट आधारित अधिगम तथा सतत मूल्यांकन प्रणाली ने अध्ययन को अधिक सहभागितापूर्ण बनाने का प्रयास किया है। निजी विद्यालयों द्वारा नवाचारों को अपेक्षाकृत शीघ्रता से अपनाते हैं, जबकि सरकारी विद्यालयों में कार्यान्वयन धीरे–धीरे होता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति धारणा एवं उत्साह में अंतर देखा जा सकता है एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करता है।

अतः माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन न केवल शैक्षिक मनोविज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक समानता, गुणवत्ता सुधार एवं राष्ट्रीय विकास के परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत आवश्यक है। यह अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता, समान अवसर तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास के मध्य संबंध को समझने का आधार प्रदान करता है और यह सुनिश्चित करने में सहायक होता है कि प्रत्येक विद्यार्थी चाहे वह सरकारी विद्यालय या निजी विद्यालय हो शिक्षा के प्रति सकारात्मक, रचनात्मक एवं उद्देश्यपूर्ण अभिवृत्ति को विकसित कर सके।

आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक शिक्षा वह आधारभूत चरण है जहाँ से विद्यार्थी अपने भविष्य के शैक्षिक तथा व्यावसायिक जीवन की दिशा को निर्धारित करते हैं। इस स्तर पर विकसित होने वाली शैक्षिक अभिवृत्ति विद्यार्थी द्वारा अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण, रुचि, प्रेरणा, अनुशासन तथा उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। भारत में शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः सरकारी एवं निजी विद्यालयों में विभाजित है, जिनकी संरचना, संसाधन, शिक्षण–पद्धति, मूल्यांकन प्रणाली, अनुशासन व्यवस्था तथा अभिभावकीय सहभागिता में स्पष्ट भिन्नताएँ पाई जाती हैं। इन भिन्नताओं का विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह जानना शोध की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा विभिन्न राज्य बोर्डों के अंतर्गत संचालित विद्यालयों में पाठ्यक्रम और मूल्यांकन की संरचना में अंतर होने के कारण विद्यार्थियों के अनुभव भी भिन्न होते हैं। निजी विद्यालयों में प्रायः आधुनिक शिक्षण–साधनों, तकनीकी संसाधनों और सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों पर अधिक बल दिया जाता है जबकि सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की सीमाएँ, शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात तथा सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि जैसे कारक शैक्षिक वातावरण को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थी शिक्षा के प्रति किस प्रकार की अभिवृत्ति रखते हैं सकारात्मक, नकारात्मक या उदासीन।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि शैक्षिक अभिवृत्ति केवल शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, लक्ष्य–निर्धारण, समायोजन क्षमता तथा सामाजिक व्यवहार को भी प्रभावित करती है। यदि किसी विशेष प्रकार के विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पाई

Received 09 April 2026; Accepted 27 April 2026. Available online: 30 April 2026. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

जाती है, तो उसके कारणों की पहचान कर अन्य विद्यालयों में भी उन विशेषताओं को अपनाया जा सकता है। इस प्रकार यह अध्ययन शैक्षिक सुधार के लिए दिशा–निर्देशक सिद्ध हो सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,समग्र एवं गुणवत्तापरक शिक्षा पर बल देती है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता तथा जीवन कौशलों के विकास की अपेक्षा की जाती है। इन उद्देश्यों की पूर्ति तभी संभव है जब विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति सकारात्मक एवं प्रेरणादायक हो। अतः सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक विश्लेषण नीति–निर्माताओं, शिक्षाविदों तथा प्रशासकों को यह समझने में सहायता प्रदान करेगा कि किस प्रकार के परिवेश में अपेक्षित शैक्षिक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं और कहाँ सुधार की आवश्यकता है।

यह अध्ययन सामाजिक समानता की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। प्रायः यह धारणा बनाई जाती है कि निजी विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता अधिक होती है, जबकि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति अपेक्षाकृत कमजोर हो सकती है। इस अवधारणा की सहायता हेतु अभिवृति का वैज्ञानिक परीक्षण होना आवश्यक है। यदि दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है, तो उसके आधार पर समुचित शैक्षिक नीतियाँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम को विकसित किया जा सकता हैं।

अंततः यह अध्ययन शिक्षकों के लिए भी उपयोगी है, क्योंकि उक्त शोध द्वारा शिक्षकों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि विद्यार्थियों की अभिवृत्ति किन कारकों से प्रभावित होती है और वे अपने शिक्षण व्यवहार में किस प्रकार परिवर्तन लाकर विद्यार्थियों में सकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं। इस प्रकार, माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता, समानता एवं प्रभावशीलता को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य का सर्वेक्षण

सपना भास्कर (2023) ने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रति भारतीय छात्र की अभिवृत्ति से सम्बन्धित अध्ययन किया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) द्वारा उन उपकरणों और सेवाओं को संदर्भित किया गया है जो सूचना का प्रयोग तथा संचार करते हुए अभिवृति विकसित करते है। आईसीटी के कुछ सबसे आम उदाहरण मोबाइल फोन और टेलीविजन हैं। आईसीटी ऑडियो–विजुअल शिक्षण विधियों को सुसज्जित करता है, जो शिक्षार्थियों के ज्ञान प्रतिधारणा और रुचि के स्तर को बढ़ाता है। इस शोध पत्र ने शैक्षिक सूचना प्रौद्योगिक का समर्थन करते और दृष्टिकोण उपायों की पारंपरिक प्रणाली को दूर करने के लिए एक उपन्यास भविष्यवादी दृष्टिकोण का प्रस्ताव रखा। वर्तमान दृष्टिकोण ने न केवल प्रौद्योगिकी के प्रभाव का पता लगाया बल्कि छात्रों की राय की भी भविष्यवाणी की। एक ऑनलाइन जागरूकता मॉडल की अवधारणा पारंपरिक पद्धति को दूर कर सकती है। डेटा विश्लेषण में, रैखिक प्रतिगमन मॉडल (एलआरएम) ने पुष्टि की है कि शैक्षिक लाभ ने दृ

Received 09 April 2026; Accepted 27 April 2026. Available online: 30 April 2026. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

ष्टिकोण को महत्वपूर्ण रूप से समझाया, और 0.75 के मूल्य के साथ पियर्सन सहसंबंध (पीसी) का उपयोग करके एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सहयोग की खोज की गई। एलआरएम मॉडल ने आईसीटी और एमटी के नौ सबसे महत्वपूर्ण शैक्षिक लाभों का अनुमान लगाया। हमने वास्तविक समय की भविष्यवाणी के साथ ऑनलाइन भविष्य कहनेवाला मॉडल तारों के निर्माण में प्रौद्योगिकी सहायता का प्रस्ताव दिया है।

धर्मेश चतुर्वेदी, हेमंत कुमार टाक, विजय सिंह रावत (2023) ने राजस्थान, भारत में नर्सिंग छात्रों के बीच अभिवृत्ति के प्रति दृष्टिकोण का आकलन किया। शोध पहले से अज्ञात प्रश्नों के उत्तर प्रदान कर सकता है, ज्ञान के अंतराल की पूर्ति कर सकता है और स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों के काम करने के तरीके को बदल सकता है इसलिए, वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान, भारत के नर्सिंग छात्रों में शोध के प्रति दृष्टिकोण का आकलन करना है। वर्तमान अध्ययन में 75.10 प्रतिशत नर्सिंग छात्रों ने शोध से संबंधित किसी भी सम्मेलन, सेमिनार, वेबिनार में भाग नहीं लिया है एटीआर स्केल के स्कोरिंग के आधार पर, लगभग आधे नर्सिंग छात्रों, 54.42 प्रतिशत (203) में सकारात्मक दृ ष्टिकोण का स्तर था, 41.83 प्रतिशत (156) में तटस्थ दृष्टिकोण का स्तर था जबकि केवल 3.75 प्रतिशत (14) में अनुसंधान के संबंध में नकारात्मक दृष्टिकोण का स्तर था। निष्कर्षों से पता लगता है। नर्सिंग छात्रों के बीच अनुसंधान के संबंध में दृष्टिकोण के स्तर के बीच जनसांख्यिकीय चर जैसे कि अनुसंधान के संबंध में कितने सम्मेलन, सेमिनार, वेबिनार में भाग लिया गया था, के बीच महत्वपूर्ण संबंध था। नर्सिंग छात्रों के लिए अनुसंधान के संबंध में नियमित पाठ्यक्रम के अलावा सम्मेलन, सेमिनार और वेबिनार जैसे शैक्षिक हस्तक्षेपों की अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि वे भविष्य के स्वास्थ्य सेवा प्रदाता हैं। अनुसंधान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण नर्सों को अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और साक्ष्य आधारित प्रथाओं पर नर्सिंग देखभाल प्रदान करने में मदद करेगा।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध की परिकल्पना

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

Received **09 April 2026**; Accepted **27 April 2026**. Available online: **30 April 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

शोध विधि

वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु शैक्षिक अभिवृत्ति परीक्षणस्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श चयन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग करके बिजनौर जनपद के 100 सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी एवं 100 निजी विद्यालय के विद्यार्थी को लिया गया है। जो सम्पूर्ण जनसंख्या में से न्यादर्श के रूप में प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 1

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

छात्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालय	50	72.40	8.15	2.36	*
निजी विद्यालय	50	76ण्85	7ण्60		

0.01'सार्थक 0.05''सार्थक, '''सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 में माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति को दर्शाया गया है। तालिका में माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 72.40 एवं 8.15 प्राप्त हुआ है जबकि माध्यमिक स्तर पर निजी विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 76.85 एवं 7.60 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 2.36 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता स्तर से अधिक हैं जो दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। इससे सिद्ध होता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

छात्राऐं संख्या मध्यमान मानक विचलन क्रान्तिक अनुपात सार्थकता स्तर

छात्राऐं	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालय	50	74.10	7.95	2.81	'
निजी विद्यालय	50	79.20	6.85		

0.01'सार्थक 0.05''सार्थक, '''सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 में माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति को दर्शाया गया है। तालिका में माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति का

Received 09 April 2026; Accepted 27 April 2026. Available online: 30 April 2026. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 74.10 एवं 7.95 प्राप्त हुआ है जबकि माध्यमिक स्तर पर निजी विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 79.20 एवं 6.85 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 2.81 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता स्तर से अधिक हैं जो दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। इससे सिद्ध होता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

शोध के निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

जॉन डब्ल्यू., एवं जेम्स वी. (2006). *'शिक्षा में अनुसंधान'* (दसवाँ संस्करण), नई दिल्ली : प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।

हेनरी ई. (2008). *'मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी'*, नई दिल्ली : पराग पब्लिकेशन्स।

लोकेश (2012). *'शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति'* (चतुर्थ संस्करण), नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस।

जे. सी. (2014). *'शैक्षिक अनुसंधान : एक परिचय'*, नई दिल्ली : शिप्रा पब्लिकेशन्स।

एस. के. (2013). *'उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान'* (द्वितीय संस्करण), नई दिल्ली : पीएचआई लर्निंग।

एस. एस. (2010). *'उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान'*, नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस।

आर. ए. (2011). *'शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी'*, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो।

अरुण कुमार (2015). *'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ'*, पटना : मोतीलाल बनारसीदास।

के. पी. (2012). *'शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान'*, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।

गॉर्डन डब्ल्यू. (1935). अभिवृत्तियाँ. सी. मर्चिसन (संपा.), *'सामाजिक मनोविज्ञान की हस्तपुस्तिका'*, वॉर्सेस्टर : क्लार्क यूनिवर्सिटी प्रेस।

सपना भास्कर (2023). सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रति भारतीय छात्र की अभिवृत्ति से सम्बन्धित अध्ययन, शोध पत्र, *International Journal of Ingenious Research, Invention and Development*, Volume 1, Issue 2.

धर्मेश चतुर्वेदी, हेमंत कुमार टाक, विजय सिंह रावत (2023). राजस्थान, भारत में नर्सिंग छात्रों के बीच अभिवृत्ति के प्रति दृष्टिकोण का आकलन, शोध पत्र, *नर्सिंग प्रबंधन में प्रगति के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल*, 2023, 11(1) : 19–5. कवपरू 10.52711ध्2454–2652. 2023.00005

Received **09 April 2026**; Accepted **27 April 2026**. Available online: **30 April 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License